

प्रारंभिक परीक्षा

बडगा समुदाय

संदर्भ

बडगा समुदाय ने तमिलनाडु के उधगमंडलम के निकट देवहब्बा फसल उत्सव मनाया, जिसमें उन्होंने अपनी पारंपरिक कृषि पद्धतियों का सम्मान किया।

नीलगिरी के बडगा -

- बडगा तमिलनाडु की नीलगिरी पहाड़ियों में रहने वाला एक मूल आदिवासी समुदाय है।
- ये अपनी अनूठी भाषा, रीति-रिवाजों और कृषि परंपराओं के लिए जाने जाते हैं।
- उन्होंने अर्ध-एकांत जीवन शैली बनाए रखी है, जिससे उन्हें अपनी समृद्ध सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में मदद मिली है।
- बडगा भाषा कन्नड़ की एक बोली है, जो आमतौर पर तमिल या कन्नड़ लिपि में लिखी जाती है।
- ऐतिहासिक रूप से, बडगा लोग मोटा अनाज, सब्जियां, चाय और कॉफी की खेती करने वाले किसान थे। (आज, कई लोगों ने मजबूत कृषि आधार को बनाए रखते हुए आधुनिक व्यवसायों में विविधता ला दी है)।
- बडगा लोग मुख्य रूप से हेथार्ड अम्मा (एक पूजनीय देवी) की पूजा करते हैं, साथ ही स्थानीय देवताओं जैसे जदयास्वामी की भी पूजा करते हैं।
- प्रमुख त्यौहार:
 - हेथार्ड हब्बा - अपनी कुल देवी हेथार्ड अम्मा का जश्न मनाते हैं।
 - जदयास्वामी महोत्सव - स्थानीय देवता का सम्मान।
 - देवहब्बा और अन्य मौसमी फसल उत्सव भी महत्वपूर्ण हैं।
- सामाजिक संरचना: मजबूत ग्राम-स्तरीय शासन के साथ एक गोत्र-आधारित प्रणाली का पालन करते हैं।
- ये विवाह अंतर्विवाही होते हैं और विवाह में पारंपरिक गीत, नृत्य और अनुष्ठान शामिल होते हैं।
- पारंपरिक वास्तुकला: ये लोग "हट्टी" नामक घरों में रहते हैं, जो पत्थर और लकड़ी से बने होते हैं और जिनकी छतें खपरैल या फूस की होती हैं।
 - इनके गाँव पहाड़ी क्षेत्रों में सघन रूप से बसे हुए हैं।



देव्वा हब्बा महोत्सव के बारे में -

- बडगा समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला एक फसल उत्सव।
- इसे "देवहब्बा" भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है "देवताओं का त्योहार।"
- यह उत्सव प्रतिवर्ष भरपूर फसल के लिए देवताओं को धन्यवाद देने तथा अगले मौसम के लिए आशीर्वाद मांगने के लिए आयोजित किया जाता है।
- पारंपरिक अनुष्ठान, सामुदायिक प्रार्थनाएं और सीढ़ीदार खेतों के माध्यम से सफेद वस्त्र पहने जुलूस शामिल होते हैं।
- सामाजिक बंधनों को सुदृढ़ करता है और पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक मूल्यों का संचार करता है।

भारत में जनजातीय समुदायों द्वारा मनाए जाने वाले अन्य प्रमुख फसल उत्सव -

1. **करम महोत्सव - ओरांव, मुंडा और हो जनजाति (झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा)**
 - प्रकृति का उत्सव मनाना, विशेष रूप से **करम वृक्ष का**, जो उर्वरता और समृद्धि का प्रतीक है।
 - इसमें युवा लड़कियों और महिलाओं द्वारा गीत, नृत्य और पूजा शामिल होती है।
2. **सोहराई - संथाल जनजाति (झारखंड, बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल)**
 - फसल कटाई के बाद मनाया जाने वाला पशु एवं फसल उत्सव।
 - इसमें भित्ति चित्र, पशु पूजा और सामुदायिक भोज शामिल हैं।
3. **गरिया पूजा - त्रिपुरी जनजाति (त्रिपुरा)**
 - समृद्धि और अच्छी फसलों के लिए **देवता गरिया की पूजा करने के लिए अप्रैल में आयोजित किया जाता है।**
 - इसमें नृत्य, गायन और ढोल तथा बांसुरी जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों का उपयोग शामिल है।
4. **नुआखाई - पश्चिमी ओडिशा की जनजातियाँ (विशेषकर संबलपुरी, गोंड और कोंध)**
 - नये चावल की फसल के स्वागत में मनाया जाता है।
 - परिवार उपभोग से पहले अपनी पहली उपज देवताओं को अर्पित करते हैं।
5. **चापर बिहू - बोडो जनजाति (असम)**
 - बिहू त्यौहार का एक संस्करण नृत्य, संगीत और भैसों की लड़ाई के साथ मनाया जाता है।
 - यह बुवाई के अंत और फसल चक्र के आरंभ का प्रतीक है।

स्रोत: [द हिंदू](#)



अपने गलनांक से कहीं अधिक गर्म किया गया सोना ठोस रह सकता है

संदर्भ

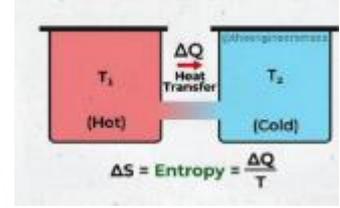
वैज्ञानिकों ने पाया है कि सोना अपने गलनांक से 14 गुना अधिक तापमान तक गर्म किए जाने पर भी ठोस बना रह सकता है। यह खोज पहले से मानी जा रही वैज्ञानिक धारणाओं को चुनौती देती है। तेज़ी से गर्म करने की प्रक्रिया ने उसे पिघलने से रोक दिया — भले ही वह केवल कुछ ट्रिलियनवें सेकंड के लिए ही क्यों न हो।

गलनांक(Melting Point) क्या है?

- गलनांक वह तापमान है जिस पर मानक वायुमंडलीय दबाव में कोई ठोस द्रव बन जाता है।
- संतुलन अवस्था: इस तापमान पर, ठोस और द्रव दोनों अवस्थाएं संतुलन में सह-अस्तित्व में रहती हैं।
- सामग्री विशिष्ट:
 - विभिन्न पदार्थों के गलनांक भिन्न-भिन्न होते हैं।
 - उदाहरण: सोना 1,064°C (1,947°F) पर पिघलता है।
- सुपरहीटिंग:
 - बिना पिघले अपने गलनांक से ऊपर गर्म किए गए ठोस को सुपरहीटेड कहा जाता है।
 - यह आमतौर पर ठोस पदार्थ के पिघलने से पहले की बहुत ही अल्पकालिक अवस्था होती है।

ऊष्मागतिकी का दूसरा नियम -

- यह बताता है कि किसी भी पृथक तंत्र की एन्ट्रॉपी समय के साथ हमेशा बढ़ती है, या उत्क्रमणीय प्रक्रियाओं के मामले में स्थिर रहती है।
 - एन्ट्रॉपी किसी तंत्र में अव्यवस्था या यादृच्छिकता का माप है।
- प्राकृतिक प्रक्रियाएँ अधिकतम एन्ट्रॉपी (अव्यवस्था) की ओर बढ़ती हैं।
- यह बताता है कि ऊष्मा स्वाभाविक रूप से गर्म से ठंडे की ओर क्यों प्रवाहित होती है, न कि इसके विपरीत।
- प्राकृतिक प्रक्रियाओं की अपरिवर्तनीयता को परिभाषित करता है और ऊर्जा प्रणालियों की दक्षता की सीमाएँ निर्धारित करता है।
- यह व्यापक रूप से यांत्रिक, रासायनिक और ब्रह्मांडीय प्रणालियों पर लागू होता है।
- ऊष्मागतिकी के दूसरे नियम के अनुप्रयोग:
 - ऊष्मा स्थानांतरण प्रणालियाँ: ऊष्मा प्रवाह की प्राकृतिक दिशा को नियंत्रित करती हैं।
 - हीटर, कूलर, रेडिएटर और हीट पंप डिजाइन करने में मौलिक।
 - रासायनिक अभिक्रियाएँ: रासायनिक प्रक्रियाओं की दिशा का पूर्वानुमान लगाने में सहायता करता है।
 - उच्च एन्ट्रॉपी की अवस्था की ओर प्रगति करती हैं।
 - मशीन और इंजन दक्षता: इंजन और मशीनों की अधिकतम संभव दक्षता निर्धारित करता है।
 - टर्बाइनों, मोटर्स और आंतरिक दहन इंजनों में ऊर्जा हानि को कम करने के लिए नवाचारों को बढ़ावा देना।



स्रोत: द हिंदू

प्रसात प्रीह विहार, प्रसात ता मुएन थॉम

संदर्भ

हाल ही में थाईलैंड और कंबोडिया ने 11वीं शताब्दी के प्रीह विहार हिंदू मंदिर पर एक सदी पुराने विवाद को कम करने के लिए युद्धविराम पर सहमति व्यक्त की।

प्रीह विहार मंदिर के बारे में -

- डांगरेक पर्वत (उत्तरी कंबोडिया) में स्थित एक हिंदू मंदिर।
- भगवान शिव को समर्पित।
- खमेर साम्राज्य के स्वर्ण युग (11वीं-12वीं शताब्दी) के दौरान निर्मित।
- आरंभ में राजा सूर्यवर्मन प्रथम (1002-1050) द्वारा निर्मित और बाद में सूर्यवर्मन द्वितीय (1113-1150) द्वारा विस्तारित।
- यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त।
- वास्तुकला विशेषताएँ:
 - शास्त्रीय खमेर मंदिर वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण।
 - 800 मीटर लंबी उत्तर-दक्षिण अक्ष पर निर्मित, जिसमें कई मंदिर हैं।
 - इसमें पाँच से अधिक गोपुर (प्रवेश द्वार) हैं, जो लंबे फुटपाथों और सीढ़ियों से जुड़े हैं।
 - अपने बहु-स्तरीय चबूतरों और एक केंद्रीय मार्ग से जुड़े गोपुरों के लिए अद्वितीय।
 - कुछ गोपुरों की छतें पत्थर की हैं; अन्य की मूल रूप से लकड़ी की छतें थीं, जिनमें से कई अब खंडहर में हैं।



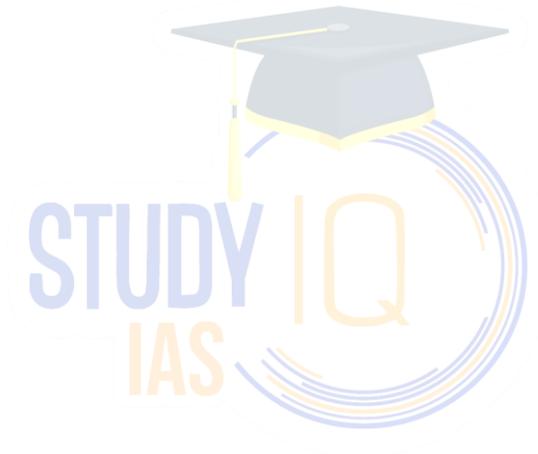
प्रसात ता मुएन थॉम -

- 12वीं शताब्दी का प्राचीन खमेर मंदिर मूलतः भगवान शिव को समर्पित था, जिसका बाद में बौद्ध प्रयोजनों के लिए उपयोग किया गया।
- प्रसात ता मुएन समूह का हिस्सा, जिसमें शामिल हैं:
 - प्रसात ता मुएन थॉम (हिन्दू मंदिर)
 - प्रसात ता मुएन (धर्मशाला या विश्राम गृह)
 - प्रसात ता मुएन टोट (अस्पताल)
- निर्माण: राजा उदयादित्यवर्मन द्वितीय के अधीन खमेर साम्राज्य के दौरान और बाद में राजा जयवर्मन सप्तम (13वीं शताब्दी) द्वारा इसका विस्तार किया गया।
 - यह अंगकोरियाई वास्तुकला और खमेर युग (9वीं-15वीं शताब्दी) के सामाजिक-धार्मिक जीवन को दर्शाता है।
- वास्तुकला विशेषताएँ:
 - प्रसात ता मुएन थॉम:



- बलुआ पत्थर से निर्मित, दक्षिणमुखी।
- इसमें एक शिवलिंग है, जिसके चारों ओर जल निकास और एक मठ है।
- इसमें पास में स्थित लैटेराइट पुस्तकालय और एक पूल भी शामिल है।
- प्रसात ता मुएन टोट:
 - एक अस्पताल के रूप में कार्य किया
 - चिकित्सा नियुक्तियों और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का विवरण देने वाले **खमेर-संस्कृत शिलालेख** शामिल हैं।
- प्रसात ता मुएन (धर्मशाला): संभवतः यह धार्मिक और व्यापारिक मार्गों पर तीर्थयात्रियों के विश्राम गृह के रूप में कार्य करता था।

स्रोत: [लाइवमिंट](#)



समाचार संक्षेप में

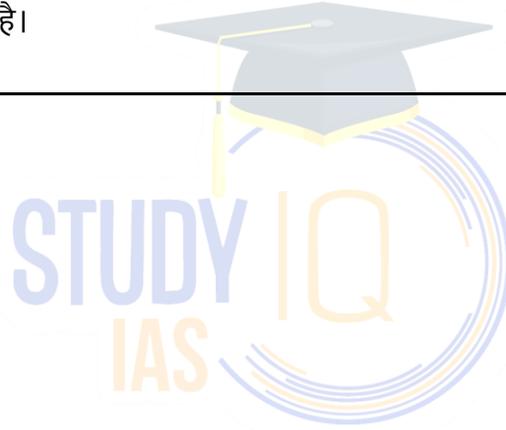
भारी जल(Heavy Water)

समाचार: भारत की पहली निजी सुविधा जो डीप्लीटेड हेवी वॉटर (Depleted Heavy Water) को अपग्रेड करने का कार्य करेगी, **TEMA इंडिया** द्वारा शुरू की गई है। यह सुविधा परमाणु ऊर्जा उत्पादन का समर्थन करेगी, जिसे अब तक केवल **BARC (भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र)** द्वारा संचालित किया जाता था। यह परमाणु तकनीक के क्षेत्र में निजी क्षेत्र की एक बड़ी भागीदारी को दर्शाता है।

भारी जल क्या है?

- **रासायनिक नाम:** ड्यूटेरियम ऑक्साइड (D_2O)
- **संरचना:** सामान्य जल (H_2O) में हाइड्रोजन परमाणुओं को ड्यूटेरियम (हाइड्रोजन का एक भारी समस्थानिक) द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है।
- **मुख्य अंतर:** भारी आणविक भार भौतिक गुणों को बदल देता है।
- **मुख्य उपयोग:** परमाणु रिएक्टरों में मंदक और शीतलक के रूप में महत्वपूर्ण।
 - फार्मास्यूटिकल्स में चयापचय अध्ययनों में अनुरेखक के रूप में, दवा उत्पादों के लिए एक स्थिरक के रूप में, और दवा की परस्पर क्रियाओं के अध्ययन के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है।

स्रोत: [इंडियनएक्सप्रेस](#)



समाचारों में व्यक्तित्व

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम (भारत के मिसाइल मैन)

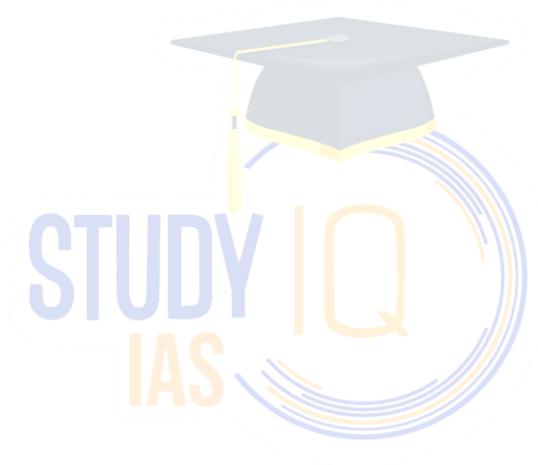


हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी ने पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को उनकी पुण्यतिथि (27 जुलाई) पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

उनके बारे में (1931- 2015) -

- 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में जन्म।
- उनकी जयंती को विश्व छात्र दिवस और राष्ट्रीय नवाचार दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- भारत के 11वें राष्ट्रपति (2002-2007) के रूप में कार्य किया, अपना कार्यकाल पूरा किया।
- पुरस्कार प्राप्त:
 - पद्म भूषण (1981)
 - पद्म विभूषण (1990)
 - भारत रत्न (1997) - भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार
- लेखक:
 - विंग्स ऑफ़ फायर
 - भारत 2020: नई सहस्राब्दी के लिए एक दृष्टिकोण
 - प्रज्वलित मन: भारत के भीतर की शक्ति को उन्मुक्त करना
 - मेरी यात्रा, अदम्य साहस, मार्गदर्शक आत्माएं, प्रेरणादायक विचार, एक सशक्त राष्ट्र की कल्पना।
- प्रमुख योगदान:
 - फाइबरग्लास प्रौद्योगिकी में उन्नति:
 - उपग्रह प्रक्षेपण यान (SLV-3)
 - डीआरडीओ में एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP) का नेतृत्व किया।
 - पोखरण-II परमाणु परीक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे भारत एक परमाणु संपन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ।
 - 2020 तक एक विकसित राष्ट्र में बदलने के लिए एक रणनीतिक रोडमैप प्रस्तावित किया गया।
 - कलाम-राजू स्टैट - डॉ. बी. सोमा राजू के साथ मिलकर कम लागत

	<p>वाला कोरोनारी स्टेट विकसित किया।</p> <ul style="list-style-type: none">● भारत की एलसीए (तेजस) परियोजना और एवियोनिक्स विकास में सक्रिय रूप से शामिल।● अपने प्रारंभिक करियर के दौरान उन्होंने भारत का पहला स्वदेशी होवरक्राफ्ट 'नंदी' डिजाइन किया।● PURA (ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाएं प्रदान करना) <p>स्रोत: पीआईबी</p>
--	--



संपादकीय सारांश

भारत GLOF घटनाओं के लिए कैसी तैयारी कर रहा है?

संदर्भ

बढ़ते तापमान और उसके परिणामस्वरूप हिमनदों के पिघलने से, GLOF का बढ़ता खतरा उच्च हिमालय में जीवन और संपत्ति के लिए खतरा बन रहा है।

हिमनद झील विस्फोट बाढ़ (Glacial Lake Outburst Floods - GLOF) क्या हैं?

- ये हिमनद झीलों या ग्लेशियर झीलों से पानी का अचानक और हिंसक निर्वहन है, जो आमतौर पर निम्नलिखित के कारण होता है:
 - झील के प्राकृतिक बाँध का ढहना (जो अक्सर ढीले हिमोढ़ या बर्फ से बना होता है)
 - झील में बर्फ या चट्टानों का हिमस्खलन।
 - भारी वर्षा या बादल फटना, जिससे पानी का दबाव बढ़ जाता है।
 - भूकंपीय गतिविधि या ग्लेशियरों का पीछे हटना, जिससे बाँध की संरचना कमज़ोर हो जाती है।
 - भीषण गर्मी, जिससे ग्लेशियर और झीलें तेज़ी से पिघलती हैं।
- भारतीय हिमालयी क्षेत्र (आईएचआर) में लगभग 28,000 हिमनद झीलें हैं, जिनमें से 7,500 भारत में हैं।

भारत में हिमनद झीलों के प्रकार -

- सुप्राग्लेशियल झीलें (Supraglacial Lakes):** ग्लेशियर की सतह पर निर्मित; उच्च तापमान के दौरान अचानक पिघलने के प्रति संवेदनशील।
- हिमोढ़-बाँधित झीलें (Moraine-Dammed Lakes):** ग्लेशियर के सिरों पर निर्मित; अस्थिर, क्योंकि वे ढीले मलबे या बर्फ के कोर द्वारा जकड़ी हुई होती हैं।

भारत के लिए जोखिम कारक -

- जलवायु परिवर्तन और बढ़ता तापमान:** 2023 और 2024 वैश्विक स्तर पर सबसे गर्म वर्ष रहे, जिससे हिमनदों के पिघलने की स्थिति और खराब हुई।
 - उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर तापमान में वृद्धि देखी गई, जिससे पृथक क्षेत्रों में GLOF का जोखिम बढ़ गया।
- बुनियादी ढांचे पर प्रभाव:** कई जल विद्युत संयंत्र, सड़कें और पुल हिमालय की उन नदियों के किनारे बनाए गए हैं जो GLOF से प्रभावित हैं।
 - उदाहरण: 2023 दक्षिण ल्होनाक GLOF ने सिक्किम में चुंगथांग बांध (₹16,000 करोड़ की परियोजना) को नष्ट कर दिया।
- खराब निगरानी और पूर्वानुमान:** उच्च ऊंचाई पर पहुंच न होने के कारण कुछ ही स्वचालित मौसम/जल निगरानी स्टेशन हैं।
 - अधिकांश हिमनद झील विस्तार पर पोस्ट-फैक्टो उपग्रह डेटा के माध्यम से नज़र रखी जाती है, जिसमें वास्तविक समय चेतावनी क्षमता का अभाव होता है।
- अवसादन और नदी आकारिकी में परिवर्तन:** GLOF अपने साथ बड़ी मात्रा में गाद और मलबा लेकर आते हैं।
 - सिक्किम में, GLOF के बाद तीस्ता नदी का जलस्तर कई मीटर ऊपर उठ गया, जिससे इसकी जल-वहन क्षमता कम हो गई और बाढ़ का खतरा बढ़ गया।
- उच्च जनसंख्या एवं पारिस्थितिकीय संवेदनशीलता:** निचले इलाकों के समुदाय घनी आबादी वाले हैं और पारिस्थितिकीय रूप से संवेदनशील हैं।
 - आजीविका, जैव विविधता और तीर्थ नगरी (जैसे केदारनाथ) अत्यधिक असुरक्षित हैं।

भारत GLOF जोखिम के लिए कैसे तैयारी कर रहा है?

- **संस्थागत तंत्र:**
 - एनडीएमए की आपदा जोखिम न्यूनीकरण समिति (सीओडीआरआर) राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिक्रिया का समन्वय करती है।
 - केन्द्रीय जल आयोग और राज्य सरकारें प्रमुख कार्यान्वयन एजेंसियां हैं।
- **राष्ट्रीय कार्यक्रम (बजट: 20 मिलियन डॉलर):** प्रारंभ में 56 उच्च जोखिम वाली झीलों की पहचान की गई थी, जिसे अब बढ़ाकर 195 कर दिया गया है (जोखिम स्तर के अनुसार वर्गीकृत)।
 - **16वें वित्त आयोग (2027-2031)** से अपेक्षित निधियों द्वारा समर्थित।
 - **कार्यक्रम के उद्देश्य (5 स्तंभ):**
 - **खतरा मूल्यांकन:** आयतन, गहराई, हिमोढ़ स्थिरता।
 - **निगरानी अवसंरचना:** स्वचालित मौसम एवं जल स्टेशनों (एडब्ल्यूडब्ल्यूएस) की स्थापना।
 - **प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली (EWS):** खतरों का अनुप्रवाह संचार।
 - **जोखिम न्यूनीकरण:** झीलों को सूखाना, धारण संरचनाएं बनाना।
 - **सामुदायिक सहभागिता:** निगरानी और अभियान टीमों में स्थानीय लोगों को शामिल करना।
- **प्रौद्योगिकी प्रगति:**
 - ढलान स्थिरता विश्लेषण के लिए एसएआर इंटरफेरोमेट्री का उपयोग।
 - विद्युत प्रतिरोधकता टोमोग्राफी (ईआरटी) द्वारा हिमोढ़ बांधों में छिपे हुए बर्फ-कोर का पता लगाया जाएगा।
 - झील की आकृति विज्ञान और आसपास के भूभाग के लिए यूएवी सर्वेक्षण।
 - झील सतह विकास मानचित्रण के लिए सुदूर संवेदन।
- **क्षेत्र अभियान:** जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।
 - वास्तविक समय निगरानी प्रणाली स्थापित की गई, जो 10 मिनट का डेटा अपडेट भेजती है।
 - भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) को उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में मैनुअल पूर्व चेतावनी के लिए तैनात किया गया है।

स्रोत: [द हिंदू](#)

भारत की पूर्वी एशिया तक पहुंच

संदर्भ

विदेश मंत्री एस. जयशंकर की दक्षिण-पूर्व एशिया के तीन देशों की यात्रा पिछले महीने, उस समय हुई जब भारत चुनावी प्रक्रिया के मध्य में था। यह यात्रा इस क्षेत्र की **रणनीतिक महत्ता** को रेखांकित करती है, विशेष रूप से **हिन्द प्रशांत क्षेत्र में भारत की प्रमुख भूमिका** निभाने की महत्वाकांक्षा के संदर्भ में। यह दौरा इस बात का संकेत है कि भले ही देश के भीतर चुनाव चल रहे हों, लेकिन भारत की **विदेश नीति और भू-राजनीतिक प्राथमिकताएँ** स्पष्ट और सक्रिय बनी हुई हैं।

दक्षिण-पूर्व और पूर्वी एशिया के साथ भारत का जुड़ाव -

- **ऐतिहासिक और सभ्यतागत संबंध:** भारत के सदियों पुराने दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ गहरे सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यापारिक संबंध हैं।
 - बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म, भारतीय लिपियों और समुद्री व्यापार के प्रसार ने कंबोडिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड और वियतनाम जैसे देशों के सांस्कृतिक और कूटनीतिक परिदृश्य को आकार दिया।
 - प्राचीन समुद्री मार्गों ने भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच एक मजबूत सभ्यतागत बंधन बनाया, जिसे ऐतिहासिक चर्चा में अक्सर **"ग्रेटर इंडिया"** के रूप में संदर्भित किया जाता है।
- **नीति विकास:**
 - **लुक ईस्ट नीति (1990 का दशक):** शीत युद्ध के बाद संबंधों को पुनः स्थापित करने तथा गतिशील एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के साथ जुड़ने के लिए शुरू की गई।
 - **एक्ट ईस्ट नीति (2014 से आगे):** दक्षिण-पूर्व और पूर्वी एशिया में आर्थिक, सुरक्षा और कनेक्टिविटी पहलों पर नए सिरे से रणनीतिक और सक्रिय ध्यान दिया गया।

भारत के लिए दक्षिण पूर्व एशिया का सामरिक और आर्थिक महत्व -

- **आर्थिक महत्व: आसियान भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है।**
 - भारत-आसियान मुक्त व्यापार समझौते ने व्यापार उदारीकरण और सहयोग को बढ़ावा दिया है।
 - कनेक्टिविटी पहल जैसे:
 - **भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग**
 - **कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट परियोजना का उद्देश्य** भारत को दक्षिण-पूर्व एशियाई आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ एकीकृत करना है।
- **सामरिक और भूराजनीतिक महत्व:**
 - **समुद्री सुरक्षा:** भारत दक्षिण पूर्व एशिया के साथ नौवहन की स्वतंत्रता, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर (एससीएस) में समान हितों को साझा करता है।
 - वियतनाम और फिलीपींस के साथ सुरक्षा साझेदारी मजबूत हुई है।
- **हिन्द प्रशांत में मानक जुड़ाव:** भारत एक नियम-आधारित व्यवस्था का समर्थन करता है, जिसमें यूएनसीएलओएस (1982) के पालन पर जोर दिया गया है।
 - विवादों के शांतिपूर्ण समाधान की वकालत करता है, विशेष रूप से द्वितीय थॉमस शोल (फिलीपींस-चीन तनाव) जैसे विवादित क्षेत्रों में।
 - भारत अपने हिंद-प्रशांत दृष्टिकोण को आसियान की केन्द्रीयता के इर्द-गिर्द ढालता है, तथा क्षेत्रीय संरचना में समूह की महत्वपूर्ण भूमिका का समर्थन करता है।

वर्तमान चुनौतियाँ क्या हैं?

- **सीमित रणनीतिक प्रभाव:** प्रयासों के बावजूद, हाल ही में हुए एक सर्वेक्षण में केवल 0.4% आसियान उत्तरदाताओं ने भारत को इस क्षेत्र में सबसे प्रभावशाली राजनीतिक/रणनीतिक अभिनेता के रूप में नामित किया - एक महत्वपूर्ण धारणा अंतर।

- **आसियान के भीतर आंतरिक विभाजन:** दक्षिण चीन सागर में चीनी आक्रामकता के प्रति आसियान विखंडित है।
 - एकता और सुसंगत रणनीति का अभाव बहुपक्षीय मंचों की प्रभावशीलता को कमजोर करता है।
- **चीन की बढ़ती आक्रामकता:** चीन बुनियादी ढांचे (बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव), सैन्य दबाव और आर्थिक सहायता के माध्यम से दक्षिण पूर्व एशिया में अपने प्रभाव का विस्तार करना जारी रखे हुए है, जो भारत की पहुंच को फीका कर देता है।
- **कनेक्टिविटी परियोजनाओं में कार्यान्वयन में देरी:** त्रिपक्षीय राजमार्ग और कलादान परियोजना जैसी प्रमुख परियोजनाओं में तार्किक, नौकरशाही और सुरक्षा चुनौतियों के कारण देरी हो रही है।
- **भारत की क्षमता संबंधी बाधाएं:** सीमित आर्थिक संसाधन, कूटनीतिक क्षमता और दक्षिण-पूर्व एशिया में निजी क्षेत्र की भागीदारी एक्ट ईस्ट उद्देश्यों की पूर्ण प्राप्ति में बाधा डालती है।

आगे की राह -

- **रणनीतिक साझेदारी को गहरा करना:** वियतनाम, फिलीपींस, इंडोनेशिया और सिंगापुर जैसे देशों के साथ रक्षा और समुद्री सहयोग का विस्तार करना।
- **कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचे में तेजी लाना:** भारत-म्यांमार-थाईलैंड राजमार्ग और संबंधित परियोजनाओं को तेजी से आगे बढ़ाना।
 - भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को आसियान से जोड़ने के लिए डिजिटल कनेक्टिविटी और बंदरगाह अवसंरचना का विस्तार करना।
- **आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देना:** बाधाओं को दूर करने के लिए भारत-आसियान एफटीए के अंतर्गत व्यापार ढांचे को संशोधित करना।
 - आसियान में भारतीय निवेश को प्रोत्साहित करना, विशेष रूप से डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित ऊर्जा और विनिर्माण में।
- **सॉफ्ट पावर और प्रवासी समुदाय का लाभ उठाना:** भारत की सांस्कृतिक विरासत, बौद्ध धर्म, योग और शिक्षा कूटनीति का लाभ उठाना।
 - छात्र आदान-प्रदान, छात्रवृत्ति और पर्यटन के माध्यम से लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करना।
- **बहुपक्षीय और मानक कूटनीति को बढ़ावा देना:** भारत को यूएनसीएलओएस (समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन) जैसे अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का दृढ़ता से समर्थन करना जारी रखना चाहिए और प्रमुख जलमार्गों में नौवहन की स्वतंत्रता के लिए खड़ा होना चाहिए।
 - इसे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन, आसियान क्षेत्रीय मंच और क्वाड+ मंच जैसे क्षेत्रीय समूहों के माध्यम से सहयोग के लिए भी सक्रिय रूप से प्रयास करना चाहिए, जहां देश क्षेत्र को सभी के लिए शांतिपूर्ण, स्थिर और निष्पक्ष बनाए रखने के लिए मिलकर काम करते हैं।

स्रोत: [ORF](#)

बाढ़ प्रवण क्षेत्रों में झुग्गी बस्तियाँ: भारत में सबसे अधिक

संदर्भ

भारत में बाढ़-प्रवण क्षेत्रों में दुनिया में सबसे अधिक झुग्गी-झोपड़ियाँ हैं

बाढ़-प्रवण क्षेत्रों में मलिन बस्तियों के लिए प्रमुख मुद्दे -

- **बाढ़ का उच्च जोखिम:** भारत में 158 मिलियन से अधिक झुग्गी-झोपड़ी निवासी बाढ़ के मैदानों में रहते हैं, विशेष रूप से गंगा डेल्टा में।
 - सस्ती भूमि के कारण झुग्गी बस्तियों के बाढ़-प्रवण क्षेत्रों में स्थित होने की संभावना 32% अधिक है।
- **व्यापक आंकड़ों का अभाव:** भारत सहित वैश्विक दक्षिण में, कमजोर समुदायों के लिए बाढ़ जोखिम पर सटीक आंकड़ों का अभाव है।
- **अनियोजित शहरी विस्तार:** पर्याप्त जोखिम आकलन या नियोजन विनियमन के बिना, शहर उच्च जोखिम वाले बाढ़ क्षेत्रों में विस्तारित हो रहे हैं।
- **सामाजिक-आर्थिक भेद्यता:** नौकरी की उपलब्धता, गरीबी और किफायती आवास की कमी के कारण लोग ऐसे क्षेत्रों में बस जाते हैं।
 - इन बस्तियों में अक्सर शिक्षा सीमित होती है, बाढ़ बीमा नहीं होता, तथा सेवाएं अपर्याप्त होती हैं।
- **खराब बुनियादी ढांचा:** जल निकासी, स्वच्छता और ठोस आवास जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है, जिससे बाढ़ का प्रभाव और भी बदतर हो जाता है।
 - अनौपचारिक आवास (टिन की चादरें, तिरपाल) नाजुक और अस्थायी होते हैं।
- **असमान शहरी विकास:** रियल एस्टेट का दबाव और जेंट्रीफिकेशन गरीबों को जोखिम भरे क्षेत्रों में धकेल देता है।
 - बिल्टर बाढ़ क्षेत्रों से बचते हैं, जहां बाढ़ में प्रवासी श्रमिक और शहरी गरीब लोग बस जाते हैं।

झुग्गीवासियों पर प्रभाव -

- **प्रत्यक्ष प्रभाव:** बाढ़ के दौरान आश्रय, सामान और जीवन की हानि।
 - अनौपचारिक बस्तियों में नाजुक आवास को नुकसान।
- **अप्रत्यक्ष प्रभाव:** नौकरियों का नुकसान, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य आवश्यक सेवाओं तक पहुंच में कमी।
 - खराब स्वच्छता और जल ठहराव के कारण बीमारियों का खतरा बढ़ गया है।
 - बार-बार बाढ़ आने से गरीबी का चक्र और भी बदतर हो जाता है।
- **सामाजिक और संस्थागत हाशिए पर होना:** आपदा तैयारी, राहत और पुनर्प्राप्ति उपायों तक सीमित पहुंच।
 - बीमा योजनाओं और जलवायु लचीलापन योजना से बहिष्कृत करना।

संभावित समाधान -

- **नीति एवं योजना उपाय:**
 - **शहरी बाढ़ जोखिम प्रबंधन में मलिन बस्तियों को एकीकृत करना:** आधिकारिक नियोजन मानचित्रों में अनौपचारिक बस्तियों को पहचानें।
 - उन्हें प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों और राहत कार्यक्रमों में शामिल करना।
 - **मानव-केन्द्रित विकास को लागू करना:** केवल बाढ़-प्रवण "स्थानों" से ध्यान हटाकर लोगों की भेद्यता पर ध्यान केंद्रित करें।
 - शहरी गरीबों की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए समावेशी बुनियादी ढांचा योजनाएं बनाएं।

- **किफायती एवं सुदृढ़ आवास:** सुरक्षित क्षेत्रों में बाढ़-रोधी निर्माण एवं किफायती आवास योजनाओं को बढ़ावा देना।
- **स्थानीय सहयोग एवं सशक्तिकरण:** आपदा प्रतिक्रिया रणनीतियों के सह-निर्माण के लिए झुग्गी समुदायों के साथ काम करना।
 - स्थानीय जल निकासी या अपशिष्ट प्रबंधन जैसे समुदाय-नेतृत्व वाले बुनियादी ढांचे में सुधार को प्रोत्साहित करें।
- **कौशल विकास और रोजगार:** स्वच्छता, जल निकासी निर्माण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में रोजगार सृजन, जिससे बाढ़ प्रतिरोधक क्षमता का भी निर्माण होगा।
- **तकनीकी और डेटा-संचालित समाधान:** जोखिम-प्रवण क्षेत्रों का मानचित्रण करने तथा समय के साथ झुग्गी-झोपड़ियों के विस्तार पर नज़र रखने के लिए उपग्रह डेटा पर मशीन लर्निंग का लाभ उठाएं।
 - इस डेटा का उपयोग बेहतर शहरी नियोजन और लक्षित हस्तक्षेप के लिए करें।

स्रोत: [द हिंदू](#)

